ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

(शोध पत्रिका)

SANSKRITIK PRAVAH

Research Journal

वर्ष 7 अंक 2 अगस्त, 2020

Bi- annual Bi-lingual

A Multi Disciplinary Refereed Research Journal
Dedicated to Socio-Cultural Harmony.

विशेषांक

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम : आदर्श संगठक

Maryādā Purushottam Shri Rām - Ideal Organiser

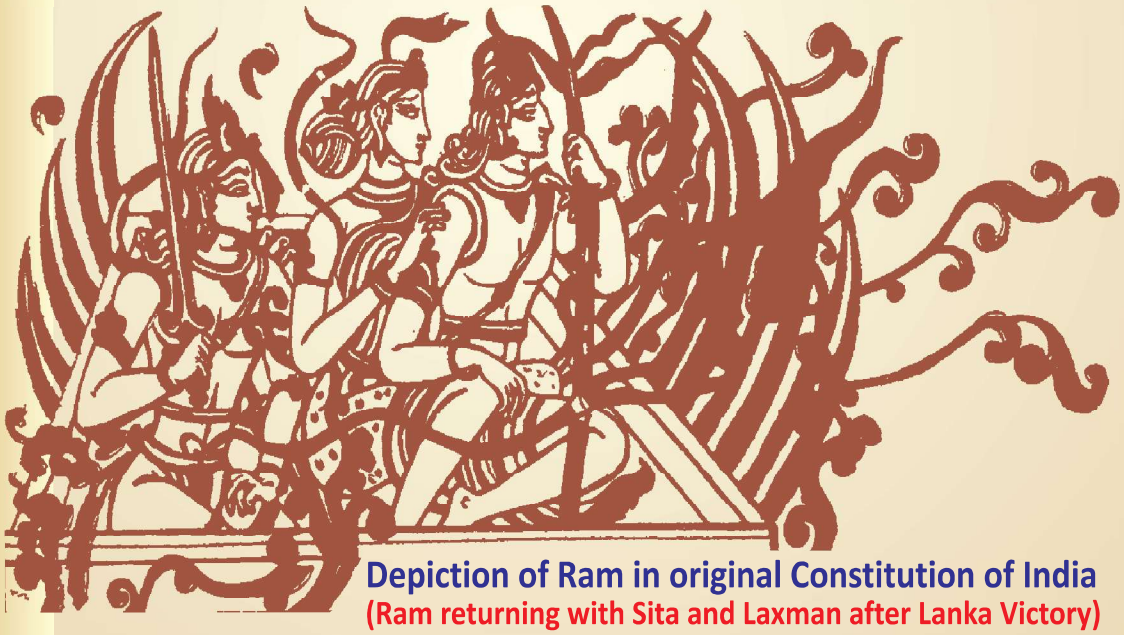

Depiction of Ram in original Constitution of India
(Ram returning with Sita and Laxman after Lanka Victory)

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान, जयपुर (राज.)

Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan

www.sanskritikpravah.com

Subscription Rate

Institution & Library	-	Rs. 2200 (5 years)	Rs. 6000 (15 years)
Individuals (Rajasthan)	-	Rs. 950 (5 years)	Rs. 2600 (15 years)
(Out of Rajasthan)	-	Rs. 1000 (5 years)	Rs. 2800 (15 years)
Single Copy	-	Rs. 125/-	

Subscription may be sent by cheques/drafts drawn in favour of
Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan

The responsibility for the facts stated, opinions expressed or conclusions reached is entirely that of the authors / contributors and the **'Sanskritik Pravah' Research Journal** accepts no responsibility for them.

Correspondence and Contact

सांस्कृतिक प्रवाह

बी-19, मधुकर भवन, न्यू कॉलोनी, जयपुर-302001

E-mail : editor.sprj@gmail.com
: ramsjaipur@gmail.com
website : www.sanskritikpravah.com
Contact : 0141-4038590 (4 PM Onwards), 094143-12288 (Chief Editor)
094600-70031(Editor)

Published by : Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan (India)
B-19, Madhukar Bhawan, New Colony, Jaipur-302001

Printed at : Kumar & Company, Jaipur

ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

(शोध पत्रिका)

वर्ष 7 अंक 2 अगस्त, 2020

अर्द्धवार्षिक द्वि-भाषी

विशेषांक

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम : आदर्श संगठक

Maryādā Purushottam Shri Rām - Ideal Organiser

सामाजिक एवं सांस्कृतिक समन्वय के लिए
समर्पित एक बहु-विषयात्मक शोध पत्रिका

website : www.sanskritikpravah.com

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान

बी-19, मधुकर भवन, न्यू कॉलोनी, जयपुर-302001

Sanskritik Pravah Research Journal

Patron

Sh. Ramprasad
Social Worker & Guardian, Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur (Raj.)

Editorial Advisory Board

Dr. Kuldeep Chand Agnihotri
Vice Chancellor Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala (H.P.)

Dr. Bhagwati Prasad Sharma
Vice Chancellor, Gautam Budh University, Greater Noida (U.P.)

Prof. J. P. Sharma
Ex Vice Chancellor
MLS University, Udaipur (Raj.)

Prof. Bhagirath Singh
Vice Chancellor
Pandit Deen Dayal Upadhyay University, Sikar (Raj.)

Prof. M. L. Chhipa
Ex Vice Chancellor,
A.B. Vajpayee
Hindi University, Bhopal (M.P.)

Dr. Alpana Kateja
Professor of Economics,
University of Rajasthan, Jaipur (Raj.)

Dr. Shreerang Godbole
Endocrinologist, Social Worker & Writer,
Pune (Maharastra)

Managing Editor

Dr. Jagdish Narayan Vijay
Assistant Registrar, Jagadguru Ramanandacharya Rajasthan Sanskrit University Jaipur (Rajasthan)
99, Keteva Nagar, New Sanganer Road,
Jaipur - 302019, E-mail : jnvijay73@gmail.com
Mobile : 09414348117

Special Assistance

Dr. Ashok Kumar Gupta
Vice Principal, Ramkrishna T.T. College,
Diggi Road, Sanganer, Jaipur (Raj.)
E-mail : ashok.lecturer@gmail.com
Mobile : 07976108370

Chief Editor

Sh. Ram Swaroop Agrawal
Ex Principal, Govt. Law College,
Kota & Sriganganagar (Raj.)
72/25, Patel Marg, Mansarovar, Jaipur-302020
E-mail : ramsjaipur@gmail.com
Mobile : 09414312288

Editor

Dr. Gopal Sharan Gupta
Centre for Rajasthan Studies,
University of Rajasthan, Jaipur
Plot No. 28, Gyanvihar Colony, Model Town,
Jagatpura Road, Malviya Magar, Jaipur-302017
E-mail : gsgupta1960gmail.com,
Mobile : 09460070031

Editorial Board

Dr. Ashutosh Pant
Chairman, Fluorecent Group of, Institutions,
Sec -26, Near N.R.I Circle, Pratap Nagar, Jaipur - 302033
17, Nandpuri, Malviya Nagar, Jaipur-302017
E-mail : pant_ashutosh@rediffmail.com,
Mobile : 09636770535

Dr. Sunil Asopa
Professor, Deptt. of Law,
J.N.V. University, Jodhpur
61-B, Laxmi Nagar, Jodhpur-324006, E-mail :
sunasopa@gmail.com, Mobile : 09414294406

Dr. Shivani Swarnkar
Assistant Professor, Deptt. of Geography,
Govt. Meera Girls College, Udaipur-313001
Qr. No. 1, Opp. Residency School Campus,
Govt. M.G. College, Udaipur-313001
E-mail : pswarn7@gmail.com, Mobile: 09929096367

Dr. Satish Chand Agrawal
Assistant Professor, Deptt. of Poltical Science,
M.L.S. University, Udaipur (Raj).
Plot No. 9, Agrasen Nagar, Udaipole, Udaipur-313001
E-mail : satish.political@gmail.com ,
Mobile : 09783055596

About Contributors of this issue

1. **प्रो. विभा उपाध्याय**
   सेवानिवृत्त प्रोफेसर एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान), 'राष्ट्र एवं राष्ट्रवाद की अवधारणा : समीक्षा' सहित तीन पुस्तकें तथा विभिन्न विषयों पर 36 शोध पत्र प्रकाशित; 10 पुस्तकों का संपादन, विभागीय शोध पत्रिका 'Jijnasa' की संपादक, 'इंडियन काउंसिल ऑफ हिस्टॉरिकल रिसर्च' (ICHR) सहित भारत सरकार के कई निकायों में सदस्य, इतिहास संकलन योजना से संबद्ध।

2. **डॉ. गौरी शंकर गुप्ता**
   भारत के भूतपूर्व राजदूत (मंगोलिया, हंगरी, बोस्निया एंड हर्जेगोविना, त्रिनिदाद एंड टोबैगो, डोमिनिका, ग्रेनाड़ा और मोंटेसेराट) एवं लेखक। कविता संग्रह 'ड्रोपलेट्स' व 'चंद लम्हें' तथा दो पुस्तकें प्रकाशित, विदेश नीति एवं संबंधित विषयों पर लेखन तथा व्याख्यान आयोजित।

3. **डॉ. प्रणव देव**
   एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास विभाग), राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, झालावाड़ (राजस्थान)
   अब तक 11 पुस्तकें, 28 शोध पत्र एवं 36 आलेख प्रकाशित। 60 राष्ट्रीय शोध संगोष्ठियों में भागीदारी एवं पत्र वाचन।

4. **डॉ. राजेंद्र नाईकवाडे**
   एसोसिएट प्रोफेसर (मराठी विभाग) श्रीबिंझानी नगर महाविद्यालय, नागपुर (महाराष्ट्र)
   5 पुस्तकों का लेखन एवं 12 पुस्तकों का सम्पादन, 7 पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं। 58 शोध पत्र, 25 पुस्तकों में लेख तथा विभिन्न समाचार पत्र-पत्रिकाओं में 140 आलेख प्रकाशित। कई साहित्यिक व सामाजिक संस्थाओं से संबद्ध। राज्य स्तरीय अनेक लेखन पुरस्कार प्राप्त।

5. **डॉ. गीताराम शर्मा**
   एसोसिएट प्रोफेसर, हरिदेव जोशी राजकीय कन्या, महाविद्यालय बांसवाड़ा (राजस्थान)
   अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं 'शब्दार्णव', 'वेदांजलि' तथा 'पेनासिया' में 5 शोध पत्र प्रकाशित, अनेक साहित्यिक पुस्तकों तथा पत्रिकाओं में लेख छप चुके हैं। कई राज्य स्तरीय पुरस्कार प्राप्त, शिक्षक एवं शैक्षणिक संगठनों से जुड़ाव।

6. **डॉ. अशोक वसंतराव घाडगे**
   सेवानिवृत्त प्राध्यापक (एसोसिएट प्रोफेसर) एवं लेखक, एस.एन. मोर. कॉलेज, तुमसार (महाराष्ट्र) में रसायन शास्त्र विभाग के पूर्व अध्यक्ष, अब तक सामाजिक विषयों पर 13 पुस्तकें तथा केमिस्ट्री के 11 सहित कुल 18 शोध पत्र प्रकाशित।

7. **दीपाली पटवाडकर**
   स्तंभकार, लेखक एवं चित्रण कलाकार। सोफ्टवेयर उद्योग में 20 वर्षों तक कार्य करने के पश्चात् भारत विद्या (Indology) में एम.ए. किया। 2016 में 'Kalapushpa Books'n ArtS' की स्थापना की। अब तक 4 पुस्तकें प्रकाशित। इनके चित्रों की पुणे में एकल प्रदर्शनी लगी। अनेक हिन्दी-मराठी पत्रिकाओं में लेख प्रकाशित।

8. **डॉ. ओमप्रकाश पारीक**
   एसोसिएट प्रोफेसर (संस्कृत), कॉलेज शिक्षा विभाग (राजस्थान), चार पुस्तकें एवं लगभग 60 शोध पत्र/ लेख प्रकाशित, शैक्षिक मंथन पत्रिका के सम्पादक मंडल में कार्य, आकाशवाणी से अनेक विषयों पर वार्ता प्रसारित।

9. **डॉ. जमना लाल शर्मा**
   सेवानिवृत प्राध्यापक, कॉलेज शिक्षा विभाग, राजस्थान। अंतरराष्ट्रीय/ राष्ट्रीय जर्नल्स में एक दर्जन से ज्यादा आलेख तथा ज्योतिष संबंधी पत्रिकाओं एवं दैनिक समाचार पत्रों में लगभग 100 लेख प्रकाशित। एक टी.वी. चैनल पर 'एस्ट्रो लाइव' कार्यक्रम का प्रसारण। जाने-माने ज्योतिषविद्।

10. **डॉ. प्रणु शुक्ला**
    असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी), राजकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चौमूँ (राजस्थान)
    आठ पुस्तकों का सम्पादन, लगभग 50 शोध पत्र तथा साहित्यिक पत्रिकाओं में कविताएँ व कहानियाँ प्रकाशित, दूरदर्शन एवं आकाशवाणी में साहित्यिक सहभागिता।

11. **डॉ. सतीश चंद अग्रवाल**
    असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)
    अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में 7 शोध पत्र प्रकाशित, सम्पादित पुस्तकों में 4 अध्यायों का लेखन, अंतरराष्ट्रीय व राष्ट्रीय सेमिनार में पत्र वाचन।

अनुक्रमणिका/ CONTENTS

		पृष्ठ संख्या
	संपादकीय ...	7
1.	**मर्यादा पुरुषोत्तम राम का रामराज्य : पुनर्निरीक्षण** - प्रो. विभा उपाध्याय	8
2.	**पारिवारिक एवं सामाजिक मूल्यों के आदर्श पुरुष राम** - डॉ. गीताराम शर्मा	14
3.	**भारतीय साहित्य में रामदर्शन** - डॉ. राजेंद्र नाईकवाडे	26
4.	**उत्तर आधुनिकतावाद और रामकथा** - डॉ. प्रणव देव	49
5.	**जनजातियों की श्रीराममय आस्था** - डॉ. अशोक वसंतराव घाडगे	61
6.	**राममयी भारतीय सांस्कृतिक चेतना** - डॉ. ओमप्रकाश पारीक	71
7.	**परिवार भाव एवं सामाजिक समरसता के आदर्श श्रीराम** - डॉ. जमना लाल शर्मा	81
8.	**लोक संस्कृति के पुरोधा श्रीराम** - डॉ. प्रणु शुक्ला	93
9.	**भारत में धर्म की अवधारणा और संविधान में पंथ निरपेक्षता का स्वरूप** - डॉ. शिखा अग्रवाल	101
10.	**The Depiction of Ramkatha in Indian Folk Paintings** - Deepali Patwadkar	110
11.	**Religions and Spirituality** - Gouri Shankar Gupta	120
12.	**पुस्तक समीक्षा** - डॉ. सतीश चन्द	129
	• **Guidelines for authors**	131
	• **Review & Publication Policy, Ethics Policy**	134
	• **शोध पत्र हेतु मुख्य विषय**	135
	• **संस्थान के प्रमुख प्रकाशन**	138

संपादकीय

भारत की शायद ही कोई भाषा होगी जिसमें रामायण सरीखा कोई ग्रंथ लिखा न गया हो। सुदूर जनजातियों के नृत्य, गीत, संस्कारों में भी राम-सीता बसे हैं। रामकथा का रिश्ता लोकमानस से है, उसके सुख-दु:ख और आशा-निराशा से है। मानस के राम सर्वलोक को सर्वदूर तक प्रभावित करते हैं। यदि कहा जाय कि भारत की संस्कृति राममय है, तो अतिश्योक्ति न होगी। पारिवारिक संबंधों के मानक हैं श्रीराम। राजधर्म, राष्ट्रधर्म, कुटुम्ब-प्रबोधन, समाज धर्म (सामाजिक समरसता) के आदर्श हैं श्रीराम।

श्रीराम सब के हैं। वे मजहब, पंथ, जाति, समुदाय, प्रांत और भाषा से ऊपर हैं। रामकथा सबको लुभाती रही है। जैन, बौद्ध, सिख साहित्य में ही नहीं, उर्दू, फारसी और अरबी भाषा तक में रामकथा पर अनेक ग्रंथों की रचना हुई है। अकबर ने मुल्ला अब्दुल बदायुनी से रामायण का फारसी में अनुवाद करवाया था। फारसी में कम से कम 23 बार राम की कथा लिखी या अनुवादित की गयी। उर्दू में रहमत, फरहत, फिराकी साहब, मजूम सहित अनेक लेखकों द्वारा लिखी रामायण उपलब्ध है। इंडोनेशिया और कतर-दोहा के संग्रहालयों में अरबी भाषा में लिखी रामायण मिलती है।

चक्रवर्ती राजगोपालाचारी द्वारा अंग्रेजी में लिखी रामायण की दस लाख से ज्यादा प्रतियाँ बिक चुकी हैं। किसी एक व्यक्ति के चरित्र पर विश्व में सम्भवत: सबसे ज्यादा साहित्य रचना राम के बारे में ही हुई है। बताते हैं कि 2-3 हजार लोक कथाएँ भी राम से जुड़ी हुई हैं।

नेपाल, श्रीलंका, म्यांमार, तिब्बत, चीन, इंडोनेशिया, थाइलैंड, जावा-सुमात्रा, बाली, फिलीपीन्स, पेरू, मैक्सिको, पूर्वी तुर्किस्तान आदि देशों में न केवल उनकी अपनी रामायण हैं बल्कि राम के चरित्र से वहाँ का लोक जीवन अनेक रूपों में प्रभावित है।

हमें अयोध्या के राममंदिर निर्माण को इसी परिप्रेक्ष्य में देखना होगा। यह मंदिर-निर्माण राष्ट्र निर्माण के लिए हो। अब रामराज्य की ओर कदम बढ़ने चाहिए। मंदिर निर्माण का सारा अभियान पृथ्वी पर रामत्व की स्थापना के लिए तथा समतामूलक समाज की स्थापना के लिए मार्ग प्रशस्त करे जहाँ सभी की गरिमा की रक्षा होगी- ऐसी शुभेच्छा।

प्रस्तुत अंक

इस अंक के लिए अनेक मित्रों एवं अन्य विद्वतजनों का सुझाव था कि राम के व्यक्तित्व का अध्ययन राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक चेतना, पारिवारिक-सामाजिक संबंध, जनजातियों के प्रति मैत्री भाव आदि के परिप्रेक्ष्य में किया जाये। इन सब बातों की चिंता एक ही व्यक्ति कर सकता है- समाज का संगठनकर्ता। वस्तुत: श्रीराम आदर्श समाज संगठक थे। इस पृष्ठभूमि में अनेक विद्वानों द्वारा प्राप्त शोध पत्र/ आलेखों का संकलन प्रस्तुत अंक में किया गया है। हम इस उद्देश्य में कितने सफल हुए हैं, इसका आकलन सुधी पाठकगण ही ठीक से कर पायेंगे।

- रामस्वरूप अग्रवाल